इतिहास के दो सूर्य भरत–बाहुवली

दृश्य 01

सूत्रधारः–(जिनकी कीर्ति से दशों दिशायें पुफिल्लित हो रहीं हैं, जिनकी दिव्यप्रभा से दिनकर की कांति भी फीकी हो गई है, जिनके जन्ममात्र से ही तीनों लोकों में आह्लाद फैला हुआ है, देवताओं में भी जिनका निरंतर यशगान हो रहा है ऐसे प्रथम तीर्थेस राजा ऋषभदेव के दो पुत्र भरत–बाहुवली मानों चंद्र–सूर्य ही हों, जिनके तेज–सौंदर्य–कीर्ति–बल–वैभव आदि को देखकर जगत की संपूर्ण वस्तुओं स्वतः अयोध्या एवं पोदनपुर में एकत्रित हो गई हैं, सम्राट भरत का दरबार लगा हुआ है, और वे प्रजा के सुख समाचार अपने मंत्रियों से पूछ रहे हैं)

भरतराज दरबार में, बैठे थे सानन्द।

पूँछ रहे थे सभी से, कुशल क्षेम आनन्द।

प्रभो आपकी कृपा से, यत्र–तत्र–सर्वत्र।

कुशल क्षेम पूरी तरह व्याप रही सर्वत्र।

play bharat ka anterdwand

सूत्रधारः– (तभी राजदूत आकर तीन संदेश सुनाते हैं)

इधर आयुधशाला से अभी–अभी आया है एक संदेश।
हुई है चकरत्न की प्राप्ति अरे रे सुनो सुनो भरतेश।।
उधर अन्तःपुर से भी मिला अचानक एक सुःखद संदेश।
हुई है पुत्ररत्न की प्राप्ति हुआ सबको आनन्द विशेष।
इसी के बीच एक संदेश देवतागण भ लाये हैं।
श्री वृषभेश बने सर्वज्ञ सभी मन में हरषाये हैं।।

play bharat ka anterdwand

भरत जीः– हे सभासदो! आज मेरा मन मूयर की भांति नृत्य कर रहा है, मेरे आनंद का आज पार नहीं है, तीनों शुभ समाचारों को सुनकर मेरा रोम–रोम पुलकित हो रहा है, चकरत्न एवं पुत्ररत्न की उत्पत्ती की भगवान ऋषभदेव को उत्पन्न हुए केवलज्ञान रत्न के आगे अत्यंत तुच्छ है, अतः हम सभी सर्वप्रथम भगवान ऋषभदेव की वंदना करने समवशरण में चलेगें, मत्रीवर संपूर्ण अयोध्या नगरी को दुल्हन की तरह सजा दो, एवं किंमिक्षिक दान की घोषणा सर्वत्र कर दो, एवं अमात्यवर भैया बाहुवली से भी समवशरण में अभी चलने का समाचार भिजवा दो।

अमात्यवरः– जी स्वामी!

दश्य 02

(भरत–बाहुवली दोनों भगवान की स्तुती वंदना हेतु समवशरण में प्रवेश करते हैं)

भगवान की स्तुती स्वरूप नृत्यगीत

दक्षिणांकः– महाराज भगवान श्री आदिनाथ जी की स्तुति व दिव्यदर्शन कर पुत्रोत्सव भी संपन्न हो गया है, अब शीघ्र ही षट्खण्ड विजय का आदेश दीजिए।

दृश्य 03

भरत जीः– पुण्य प्रताप से वैसे ही अपार संपदा है, सभी क्षेत्रों के राजा एवं प्रजा पिता श्री के प्रभाव से वैसे ही आज्ञाकारी हैं, फिर षट्खण्ड विजय की क्या आवश्यकता है, किसी को भय दिखाकर बल से पराधीन करना सरल है, किंतु लोगों के मन पर प्रेम से राज्य करना कठिन है।

दक्षिणांकः– महाराज आपकी उदासी का कारण मैं जान सकता हूँ, आप तत्वज्ञानी एवं आत्मध्यानी हैं, भगवान श्री ऋषभदेव के पुत्र हैं, चीटी मात्र का भी दिल दुखाना आप को सहन नहीं है महाराज। किंतु आपके यहॉ चकरत्न उत्पन्न हुआ है उसका कर्तव्य तो आपको निभाना ही होगा महाराज, यही राजनीति का धर्म है, और समय की मांग।

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा ... 11 मार्च 2023 खड़ेरी जिला दमोह

भरत जीः—पुत्र कितना भी महान हो मंत्रीवर, किंतु मॉ के अहसानों को कभी नहीं भूलता, हर सफलता और विफलता को अपने मॉ के चरणों में अर्पित करना है, आज ये अभागा भरत अपने द्वंद्व को मिटाने अपनी मॉ के चरणों में जाना चाहता है, दक्षिणांक, जाना चाहता है

(अचानक से पीछे से माता नंदा पुत्र भरत की पीठ पर हांथ रखती है।)

भरत जीः— मॉ(और माता के चरण स्पर्श करते हैं।)

माता नंदाः— यशस्वी भव! चिरंजीव भव! पुत्र में कब से तेरी प्रतीक्षा कर रही थी, आज मेरा भरत धरती का सबसे सौभाग्यशाली पुरूष है, तीनों सुःखद समाचारों ने मेरे दूध के गौरव को और बड़ा दिया है, और तू उदास है, बात क्या है?

भरत जीः— ममता सत्य को स्वीकार नहीं करती मॉ

माता नंदाः— भरत की मॉ इतनी कायर भी नहीं की ममता के बंधन में अपने बेटे के चेहरे के सत्य को न पढ़ सके मैं सब समझती हूँ, आत्मज्ञानी भरत को भला इस षट्खण्ड विजय में क्या रूची हो सकती है, फिर भी बेटा अभी तुम्हारा राजधर्म यही है कि उल्लास पूर्वक दिग्विजय के लिए प्रस्थान करो।(माता नंदा उच्च स्वर में) भरत क्षेत्र के भावी भाग्य विधाता, आदि चक्रवर्ती सम्राट नंदा के दुग्ध से पुष्ट सौभाग्य शाली ऋषभ पुत्र की इस कायरता का कारण राजमाता जानना चाहती है।

भरत जीः— भरत को चाहे जो कुछ कहा मॉ, पर भाग्यशाली नहीं, आज इस अभागे भरत को अपने उन सौ भाइयों एवं उन नागरिकों के भाग्य से ईर्ष्या हो रही है, जिन्हें आज से ही प्रतिदिन तीन—तीन बार छः छः घड़ी भगवान ऋषभदेव की दिव्यध्वनि सुनने का अवसर प्राप्त होगा, उसी समय तुम्हारा ये अभागा भरत शाम—दाम—दण्ड भेद की राजनीति में उलझा हुआ युद्ध का संचालन कर रहा होगा मॉ।

माता नंदाः— किंतु भरत का भारत अखण्ड होना चाहिए छः खण्डों में विभाजित नहीं।

भरत जीः— भरत अपना कर्तव्य पहॅचानता है, कर्तव्य की ठौकर बुद्धि ही बर्दास्त कर सकती है, ह्रदय नहीं।

माता नंदाः— हे पुत्र चक्रवर्ती की ऑखों में आंसू शोभा नहीं देते।

भरत जीः— क्या मॉ से भी ह्रदय की पीड़ा को छुपाना होगा, क्या अब ये अभागा भरत अपनी जन्मदात्री मॉ के सामने भी पीड़ा के आंसू नहीं बहा सकता मॉ।

माता नंदाः— पुत्र! बात माता कि नहीं, राजमाता की है।

भरत जीः— ठीक है मॉ, तेरे आदेश और कर्तव्य के वश में, ये चक्ररत्न का भार ढोकर दिग्विजय के लिए जाता हूॅ, पर आप सत्य समझना मॉ, आपके पुत्र का धर्म पूर्ण कषायों पर ही विजय प्राप्त करना होगा, आपके पुत्र भरत को षट्खण्ड नहीं एक अखण्ड आत्मा ही चाहिए मॉ, एक अखण्ड आत्मा ही चाहिए।

माता नंदाः— विजयी भव पुत्र

(घर में ही वैरागी भरत जी भजन के साथ दृश्य परिवर्तन)

<u>दृश्य—04</u>

(सूत्रधार—और भरत जी करोड़ों सैनिकों को साथ ले साठ हजार वर्ष के लिए दिग्विजय हेतु निकल जाते है, रास्ते में भरत जी के पुण्योदय एवं पवित्रता से प्रभावित होकर राजागण स्वयं उनकी अधीनता स्वीकार करते है, अपनी उत्तमोत्तम कन्यायें तथा उत्तमोत्तम भेंट प्रदान करते हैं, भरत जी उन्हें वह राज्य वापस देकर आंगे बढ जाते है, महापुरूष पराई वस्तु पर अतिक्रमण नहीं करते भरत महाराज की संपूर्ण षट्खण्ड विजय में एक भी बूंद रक्त की नहीं बहती भरत महाराज निरंतर उत्साह के साथ आगें बढते जा रहे हैं।)

भजनः— चक्र रत्न साथ है, किंतु धर्म साथ है

भरतेश की सेना चली, आत्मज्ञानी की सेना चली..........

(चक्रवर्ती सम्राट भरत क्रमशः आगे बढते जा रहे हैं, और

(राजा 01 अपने मंत्री के साथः भरत जी को मुकुट भेंट करते हैं और भरत जी स्वीकार कर तुरंत वापिस कर देते हैं)

(राजा 02 अपने मंत्री के साथः भरत जी को मुकुट भेंट करते हैं और भरत जी स्वीकार कर तुरंत वापिस कर देते हैं)

(राजा 03 अपने मंत्री के साथः भरत जी को मुकुट भेंट करते हैं और भरत जी स्वीकार कर तुरंत वापिस कर देते हैं)

(अचानक से सेनापति दौडते हुए घबराये हुए आते हैं)

सेनापतिः— महाराज!महाराज!महाराज!महाराज! पोदनपुर राज्य में चक्ररत्न सहसा रूक गया है।

भरत जीः— विजयोत्सव से मैं थक गया हूँ, अमात्य ह्रदय विश्राम चाहता है।

अमात्यः— जीवन में विश्राम ही कहां है सम्राट, संघर्ष तो क्षत्रिय का सहोदर है, उसका जन्म ही इसके साथ होता है, और..और अभी तो स्वयं चक्ररत्न भी विश्राम नहीं चाहता विजय का जो व्रत हम लेकर निकले हैं उसे पूरा करके ही लौटना चाहिए, अभी महाराज बाहुवली भी तो प्रणाम करने नहीं पधारे, इसी से यह चक्ररत्न रूक गया है महाराज।

भरत जीः— विजय का व्रत अरे यह तो हिंसा का ही दूसरा नाम है, पारस्परिक कलह से बचने के लिए, पिताश्री जो सभी सहोदरों में राज्य का विभाजन कर गये थे, आज मैं उनसे संतुष्ट न होकर सभी सहोदरों के मूॅं का ग्रास भी झपटने के लिए तैयार हूँ, क्या सीमा है इस पाप की हॉ! अब मैं समझ गया कि इस विश्व मैं क्रांति का सूत्रपात क्यों होता है।

सेनापतिः— षट्खण्डादिपति सम्राट भरत के विरूद्ध क्रांति करने की सामर्थ्य आज किसमें है महाराज।

भरत जीः— किंतु अमात्यवर बाहुवली मुझे, पुत्र अर्ककीर्ति से भी प्रिय हैं। यदि मेरा संदेश पाकर वो भी अन्य सहादरों की भांति दीक्षा के लिए निकल पड़े तो क्या मैं छोटी मॉ के समक्ष अपना कंलकित मूॅं दिखा सकूॅंगा।

दक्षिणांकः— महाराज! आप चिंता न कीजिए मैं स्वयं इस कार्य को संपन्न करने का संकल्प करता हूँ, और मुझे विश्वास है कि मैं महाराजा बाहुवली को यहॉ लाने में समर्थ हो सकूॅंगा आप निश्चिंत रहें महाराज।

भरत जीः— दक्षिणांक मेरा ह्रदय साक्षी नहीं देता बाहुवली को मैं बाल्यपने से ही जानता हूँ, उसका हठ इस चक्र के हठ से किसी भी प्रकार कम नहीं।

दक्षिणांकः— महाराज! आपके चरणों के प्रसाद से अब तक विषमतम राजनीतिक चक्रों में पड़कर भी असफल नहीं हुआ फिर स्नेह आसक्त सहोदरों के ह्रदय का मिलन, भला बताइए इसमें कौन सी बड़ी बात है।

भरत जीः—दक्षिणांक तुम अत्यन्त प्रवीण एवं वाक्चातुर्य में कुशल हो हमें पूरा विश्वास है, आप प्रस्थान कीजिए।

(सूत्रधारः— और चतुर मंत्री हजारों सपने मन में संजोय पोदनपुर की ओर रवाना हो जाता है, पर यह तो काल ही जानता है कि भविष्य गर्भ में क्या छिपा है, दुनिया का हर प्राणी सफलता की आशा में स्वाछोस्वास लेता है किंतु होनहार को जो मंजूर हो वही होता है चलिए हम चलते हैं बाहुवली के दरबार पोदनपुर में जहॉ पर भरत के मंत्री दक्षिणांक बाहुवली को छल के द्वारा भरत जी के आंगे प्रणाम कराना चाहते हैं, लीजिए प्रस्तुत है बाहुवली जी का दरवार)

दृश्य 05

(बाहुवली जी राजदरबार में कुछ चिंता ग्रस्त टहल रहे है तभी गुप्तचर का प्रवेश होता है)

बाहुवली जीः— अरे! गुप्तचर सुमेरू तुम

गुप्तचर सुमेरूः— क्षमा करें महाराज! मुझे विशेष आवश्यक समाचार हेतु यहॉ आना पड़ा है, महाराज महाराज आपके ज्येष्ठ भ्राता महाराज भरत नगर के बाहर सेना सहित विश्राम

बाहुवली जीः— हॉ कहो क्या विशेष समाचार है।

गुप्तचर सुमेरूः— महाराज आपके ज्येष्ठ भ्राता महाराज भरत नगर के बाहर सेना सहित विश्राम कर रहे हैं, महाराज वेष बदलकर घमूते—घूमते उधर जा निकला , तो महाराज दौ सैनिक आपस में गुप्त वार्ता कर रहे थे कि उनका एक अत्यंत विश्वस्त अमात्य आपकी सेवा में आ रहा है महाराज कि आप वहॉ जायें और उन्हें प्रणाम करें क्योंकि आपके प्रणाम के बिना चक्ररत्न आगें नहीं बड़ सकता है महाराज।

बाहुवली जीः— सुमेरू हम तुम्हारी कर्तव्यनिष्ठा से अत्यंत प्रसन्न हुए है, तुमने हमारे राज्य की सेवा की है, तुम्हारी यह सेवा अवश्य पुरस्कृत होगी, जाइये और गुप्त सूचनायें एकत्रित कीजिए।

(महाराज बाहुवली पुनः टहलने लगते हैं, अचानक से दक्षिणांक का प्रवेश)

दक्षिणांकः— महाराज की जय हो! महाराज की जय हो!

बाहुवली जीः— आओ दक्षिणांक आओ

दक्षिणांकः— महाराज मैं महाराज भरत का दूत दक्षिणांक आपके समक्ष मांगलिक संदेश लेकर उपस्थित हुआ हूँ, स्वामी, महाराजा भरत षट्खण्ड को विजय करके अयोध्या की ओर लौट रहे हैं, मार्ग में सेना सहित पूज्य पिताश्री एवं मातू श्री के दर्शन कर नेत्र तृप्त किये अब आपसे मिलने के लिए उनके ह्रदय में स्नेह की सरिता उमड़ रही है महाराज।

बाहुवली जीः— किंतु इस समय तों हम दक्षिणांक आवश्यक राज कार्य के कारण उनसे मिलने में असमर्थ हैं।

दक्षिणांकः— नहीं स्वामी नहीं(अत्यंत व्यग्र होकर) मेरी आशा व विश्वास पर पानी न उड़ेलिये महाराज, मैं महाराज भरत को मूॅं नहीं दिखा सकूंगा, अपने बड़े भाई के दर्शन करना भी जीवन के महत्वपूर्ण कार्य का ही एक अंग है महाराज।

बाहुवली जीः— दक्षिणांक तुम अपनी कार्य की सिद्धी में अत्यंत निपुण हो, राजनीतिज्ञ भरत का अमात्य भी एक कुशल राजनीतिज्ञ ही होना चाहिए, तुम अपनी वार्ता में जिस बात को अब तक छिपाते रहे हो उसके रहस्य का उद्घाटन तुम्हारे आगमन से पूर्व हो चुका है, क्या तुम्हें इसका ज्ञान है।

दक्षिणांकः— आप ये क्या कह रहे हैं महाराज, चक्रवर्ती की हार्दिक इच्छा यहॉ रूकने की तनिक भी नहीं थी किंतु आपके सदृश कामदेव के दर्शन करने की उनकी इच्छा हम रोक नहीं सके महाराज, क्या आप हमें अपनी दया का पात्र नहीं बनायेगें महाराज, क्या ये हमारे पाप की पराकाष्ठा नहीं होगी।

बाहुवली जीः— मेरी दया की भिक्षा लेकर, पुण्यवान बनने का दम रखने वाले दक्षिणांक, पाप की परिभाषा अपने ह्रदय से पूॅंछो मेरे स्वतंत्र राज्य की सीमा में आकर चक्र सहसा रूक गया है, कि हमें भी अन्य शक्तिहीन राजाओं की भांति पराधीन बनाया जाए, इसलिए तो महाराजा भरत ने सेना सहित नगर के बाहर पड़ाव डाला है, अपने चातुर्य के बल पर मेरे प्रभंजन का प्रयास कर रहे हो बस! बालो क्या इसकी सत्यता में कोई संदेह है।

दक्षिणांकः— महाराज! महाराजा भरत के सहोदर को इसका उत्तर देने की क्षमता नहीं, मैं तो आपके चरणों विनम्र विनती करता हूँ करता हूँ महाराज, विनम्र विनती करता हूँ।

बाहुवली जीः— गुणों के आगे मेरा ह्रदय स्वयमेव झुक जाता है, दक्षिण, किंतु मुझे छल पूर्वक अपने चरणों में झुकाने का तुम्हारे स्वामी का सपना असत्य सिद्ध होगा, श्रेष्ठ माता के सपूत को एक किंकर की भांति बुलावा देना, क्या उसका तिरस्कार नहीं।

दक्षिणांकः— महाराज हमारे स्वामी, अपने मंत्रियों को साधारण व्यक्तियों के पास नहीं भेजा करते, इसमें स्वयं उनकी प्रतिष्ठा की हानि होती है।

बाहुवली जीः— क्या तुम्हारे स्वामी, तुम्हें साधारण व्यक्तियों के समीप नहीं भेजा करते, हाहहहह... तो तुम्हारे स्वामी तुम्हें असाधारण व्यक्तियों के पास इसलिए भेजते हैं कि तुम उन पर कुचक्रों का जाल फैलाओ, अनेक भयावह संदेश भेजकर छोटे भाइयों को तो वनवास भेज दिया, किंतु मेरी शक्ति का विचार करके तुम्हारे सदृश एक चतुर अमात्य को मुझे फॅसाने के लिए भेजा है, अपनी चाटुकारिता से बाज आओ दक्षिण, मेरी क्रोधाग्नी अधिक प्रज्जवलित मत करो, बस यहॉ से चले जाओ (दक्षिणांक जाने लगते हैं) दक्षिण मैं समझ गया हूॅं, कि तुम्हारें स्वामी हम पर आक्रमण किये बिना नहीं रहेगें, किंतु युद्ध यहॉ नहीं युद्ध वहीं होगा, जहॉ तुम्हारी सेना ने पड़ाव डाला है, तुम्हारे स्वामी को षट्खण्ड जीतने का अभिमान है न, जाकर कह दो कि

इसका निर्णय रणक्षेत्र में होगा, वे अपनी सेनायें सुसज्जित रखें, जाइये(दक्षिणांक चले जाते है) मंत्रीवर, भैया का काई भी दूत, गुप्तचर या कोई सेवक नगर की सीमा में प्रवेश न करने पाये

मंत्री(बाहुवली जी के):— जो आज्ञा महाराज

सूत्रधारः— और दक्षिण भरत का दूत टूटे हुए पत्ते की भांति वापस चला गया, लेकिन बाहुवली उसके छल में नहीं आये, क्यों आयें दूनिया का सबसे बड़ा कष्ट है पराधीनता एक ही मॉ के दो सपूत कोई एक दूसरे के अधीन क्यों रहें, चलों पहुॅचते हैं, भरत के दरवार में)

<u>दृश्य 06</u>

(भरत का दरवार लगा हुआ है, आपस में सभी एक—दूसरे से चर्चा कर रहे हैं, तभी दक्षिणांक का प्रवेश)

दक्षिणांकः— (नीचे सिर किये हुये प्रवेश करते हैं) महाराज, महाराज, महाराज मैं आपके समक्ष मूॅ दिखाने के योग्य भी नहीं हूॅ, जो संकल्प लेकर मैं पोदन पुर गया था, वह पूर्ण नहीं हो सका महाराज, पूर्ण नहीं हो सका।

भरत जीः— दक्षिणांक इसमें दुःखी होने की कोई बात नहीं, कार्य की सिद्धी पर हमारा कोई अधिकार नहीं किंतु प्रयत्न करना ही हमारा कर्तव्य है।

दक्षिणांकः— महाराज! मैंने अतिविनय पूर्वक राजनीति, धर्मनीति एवं लोकनीति से हर प्रकार उन्हें यहॉ लाने का प्रयत्न किया, जिन लोगों ने मेरी वार्ता सुनी सबके ह्रदय मोम की भांति पिघल गये, किंतु महाराजा बाहुवली के पाषाड़ ह्रदय को समझने में मैं सर्वथा असमर्थ रहा महाराज, सर्वथा असमर्थ रहा। मेरे सफलता के इतिहास मेंयह बात कलंक बनकर मेरे ह्रदय में कांटे की भांति हमेशा कशक उत्पन्न करती रहेगी महाराज।

भरत जीः— दक्षिणांक बाहुवली के हठ एवं अभिमान से, मैं अच्छी तरह से परिचित हूॅ, आज वो बड़े भाई को प्रणाम करने में भी अपना अपमान समझने लगा है, एक छोटे से राज्य का इतना अभिमान, हा.. धिक्कार है उसकी बुद्धि की जड़ता को।

दक्षिणांकः— महाराज, महाराज बाहुवली ने कहा कि तुम्हारे स्वामी हम पर आक्रमण किये बिना नहीं रहेंगे, किंतु उनसे कह देना इसका निर्णय रणक्षेत्र में होगा अपनी सेनायें ससज्जित रखें, महाराज इतना कहकर उन्होंने अपने मंत्रियों को आज्ञा दी, कि भैया को कोई भी व्यक्ति मेरी सीमा में पैर न रखने पाये, महाराज।

भरत जीः— दक्षिणांक बाहुवली के अभिमान को मैं एक क्षण में मिट्टी के खिलौने की भांति चूर—चूर कर दूंगा वो समझता है कि उसका शरीर मेरे से अधिक ऊंचा है मैं उसे एक अंगुली से ही चक्र की भांति घुमा दूंगा, किंतु मुझे विचार आता है, दक्षिण, छोटे भाई पर शक्ति का प्रदर्शन धर्मनीति के अनुकूल नहीं है, क्या संसार की द्रष्टि में मेरा यह कार्य उचित होगा, हम जानते हैं दक्षिण बाहुवली नादान है, किंतु क्या मैं भी अपने विवेक का परित्याग कर दूॅ, यदि भाई के स्थान पर कोई ओर होता तो उसे केवल अपने भृकुटी विक्षेप से यम लोक पहॅुचा देता, हम जानते हैं दक्षिण बाहुवली को अपने बल का अभिमान है, किंतु सहोदर के प्रति परीक्षा की इस घड़ी में, हमें बहुत शीलता से निर्णय लेना होगा।

सूत्रधारः— और बाहुवली ने भरत की अधीनता स्वीकार नहीं की, और भला क्यों स्वीकार करे उसकी भुजाओं में भी वही रक्त बहता है, जो भरत जी की भुजाओं में बहता है, धरती का चप्पा—चप्पा स्वतंत्रता की घोषणा करता है, अरे उन्मुक्त हवायें भला किसके अधीन हैं, समुद्र की लहरों पर पहरा किसने बिठाया है, चांद और सूर्य की गति को किसने रोका है, इस धरा की गुरूता को किसने खंडित किया है, हिमालय के मस्तक को किसने नीचे किया है, फिर बाहुवली भी किसी चांद और सूर्य से कम नहीं।

<u>दृश्य 07</u>

(भरत जी दरवार)

सेनापति 02(भरत जी):— महाराज! महाराज बाहुवली युद्ध के लिये आ चुके हैं।

भरत जीः— ठीक है।

सेनापति 02(भरत जी):— महाराज युद्ध लोहास्त्रों से नहीं कुसुमास्त्रों से होगा।

मंत्री 01(भरत जी):– युद्ध कुसुमास्त्रों से होगा, किंतु चक्रवर्ती और कामदेव को तो युद्ध में बाल भी बांका नहीं हो सकता, क्योंकि आप दोनों भाई चरम शरीरी हो असंख्य सेना का वृथा संहार होगा महाराज, इस पर विचार होना चाहिए।

मागध सेनापतिः– महाराज यदि सेनाओं में लोहास्त्रों का प्रयोग होगा तो, प्रलय काल के दृश्य उपस्थित हो उठेंगे, इसलिए मेरे मंतव्य अनुसार युद्ध को धर्म का रूप दे दिया जाये।

भरत जीः– ठीक है, लाकादर्श को गिराने वाले इस सहोदर युद्ध का फल निरपराध सैनिकों को क्यों भोगना पड़े दोनों ही सहोदर इसे स्वयं क्यों न भोगे। किंतु इसका निर्णय मैं नहीं कर सकता बाहुवली से जाकर पूछो, वो जो भी निर्णय करेंगे हमें स्वीकार है। मागध बाहुवली के पास जाओ और शीघ्र ही युद्ध के निर्णय से हमें सूचित करो।

अमात्य वर (भरत जी):– महराज युद्ध के नाम से संपूर्ण सेना में खलबली मच गई है, चक्रवर्ती की सेना जिसने यह नहीं जाना कि पराजय क्या होती है, आज युद्ध के नाम से उसमें रोमांच छा गया है महाराज, रोमांच छा गया है।

भरत जीः– किंतु अमात्य वर सैनिकों का तो युद्ध ही जीवन होता है इसमें भय की कौन सी बात है, फिर चक्रवर्ती की सेना को तो पराजय की कल्पना भी नहीं करना चाहिए।

अमात्य वर (भरत जी):– पराजय की कल्पना, पराजय की कल्पना भी तो मानसिक पराजय है सम्राट, किंतु भाई–भाई का यह युद्ध न्यायोचित नहीं है, भीषण रक्त पात होगा, और सबसे बड़ा दुष्परिणाम तो यह होगा कि इस लोक से भ्रातृ स्नेह की पावन परम्परा ही समाप्त हो जाएगी महाराज।

(मागध दौड़ते हुए आते हैं)

मागध सेनापतिः– स्वामी!स्वामी महाराज बाहुवली ने धर्मयुद्ध सहर्ष स्वीकार कर लिया है, प्रथम द्रष्टि युद्ध होगा, द्वितीय जल युद्ध होगा एवं तृतीय मल्ल युद्ध होगा महाराज, मल्ल युद्ध।

भरत जीः– अरे सहोदर के साथ धर्मयुद्ध कैसा, यदि बाहुवली हार गया तो वो भी ठीक नहीं होगा वो दीक्षा के लिए निकल जाएगा, और यदि मैं युद्ध नहीं करता तो ये राजधर्म के विरूद्ध है, लोग मुझे कायर कहेगें, इसमें कुल की भी निंदा होगी, मुझे क्या उपाय करना चाहिए। जिससे भाई की भी मान रहे और मैं भी धर्मसंकट में न पड़ूं।(भरत जी सोचने लगते हैं)

सुत्रधारः–अरे स्वयं बाहुवली ने ही धर्मयुद्ध स्वीकार किया है, आखिर बाहुवली मेरा सगा भाई है उसकी भुजाओं में वही रक्त बहता है, जो मेरे अंदर है, हम एक ही पिता की संतान हैं, दोनों में भावों की समानता होना सहज है, आखिर वो मेरी अधीनता स्वीकार क्यों करे, अरे एक भाई दूसरे को अधीन करे नहीं!नहीं! यह तो अनर्थ है, सच है उसी ने इन तीनों युद्धों का निर्णय कर प्रेम का मार्ग खोजा है, जब दोनों एक दूसरे से नेत्र मिलायेगे तो नेत्रों से युद्ध नहीं प्रेम युद्ध होगा, जब दोनों एक–दूसरे पर जल फेंकेगे तो कषाय भड़केगीं नहीं कषाय शांत होंगी, और जब हम दोनों में मल्ल युद्ध होगा तो दोनों के ह्रदय मिलने से दो प्रेम सागर मिलकर एक हो जाएगे, अरे इसी में मेरा आनंद, इसी में मेरी विजय, यदि भाई तीनों युद्ध में जीतता है तो चक्र उसी को भेंट दे दूंगा इसी में मेरा कर्तव्य और बडप्पन है, इससे क्षत्रिय धर्म भी नष्ट नहीं होगा, भ्रातृ प्रेम भी बना रहेगा, पिता श्री के कुल की गरीमा भी सुरक्षित रह जाएगी।

मागध सेनापतिः–महाराज!महाराज!महाराज!

भरत जीः–हॉ।

मागध सेनापतिः–महाराज बाहुवली युद्ध के लिए आपकी प्रतीक्षा में है, किंतु महाराज, महाराज बाहुवली एक योद्धा की भांति वस्त्र पहनकर खड़े हैं। और आप इस प्रकार–आपकी शक्ति अतुल्य है किंतु युद्ध में तों पूर्ण सुसज्जित होकर ही जाना चाहिए।

भरत जीः– अरे मागध! युद्ध में मेरी पराजय नहीं होगी, चलो चले

सूत्रधारः– और आइये चलते हैं, इतिहास के उस रणक्षेत्र में जहॉ युद्ध भी हुआ और वैराग्य भी हुआ, दो भाईयों का मिलन भी हुआ, क्षेत्रिय धर्म की लाज भी रही।

दृश्य 08

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक महोत्सव 06 मार्च 2023 से 11 मार्च 2023 खुड़ी जिला नर्मदा

(बाहुवली जी पूर्व से रणक्षेत्र में भरत जी की प्रतीक्षा में तैयार खड़े हैं,)

उद्घोषकः– द्रष्टि युद्ध प्रारंभ हो

(और बीच–बीच में अपने राजा के प्रदर्शन अनुसार सैनिक गण अपने–अपने महाराज की जय–जय कार बोलते हैं, और सम्राट भरत द्रष्टि युद्ध में परास्त हो जाते हैं, और सम्राट भरत के सैनिक समूह में शांति का माहौल हो जाता है।)

उद्घोषकः– जल युद्ध प्रारंभ हो

(उपरोक्तानुसार सम्राट भरत जी पुनः जल युद्ध में भी हार जाते हैं)

सैनिक सम्राट भरत जी की ओर सेः– अरे! ये क्या महाराजा भरत पुनः हार गये।

सैनिक सम्राट बाहुवली जी की ओर सेः– महाराजा बाहुवली जलयुद्ध में जीत गये।

(और महाराजा बाहुवली जी का सैन्य समूह जय–जयकार से गूंजने लगता है।)

उद्घोषकः– मल्ल युद्ध प्रारंभ हो

(उपरोक्तानुसार सम्राट बाहुवली जी सम्राट भरत जी को कंधे पर उठाकर चारों दिशाओं में घुमाकर ससम्मान सम्राट भरत को एक स्थान पर उतार देते हैं, और सम्राट बाहुवली जी की विजय के साथ मल्ल युद्ध समाप्त हो जाता हैं और सम्राट बाहुवली युद्धोपरांत सम्राट भरत के चरणों में झुक जाते हैं)

भरत जीः– भाई मुझे इस चक्ररत्न की तनिक भी अभिलाषा नहीं, यह स्वतः युद्धशाला में उत्पन्न हो गया, और इसने मुझे संपूर्ण पृथ्वी पर भटकाया है भाई, भाई तनिक तो मेरी ओर देखो, मैं तुम्हारा शत्रु नहीं हूॅ। लो ये संपूर्ण राज्य तुम सम्भालों मैं षट्खण्ड विजय करके आया हूॅ, तुम ही इसके स्वामी हो, (सम्राट भरत ललकारते हुए कहते हैं) ओ चक्रपिशाच!

(और चक्रपिशाच नृत्य करता हुआ सम्राट भरत के निकट खड़ा हो जाता है)

भरत जीः– मुझे अब तुम्हारी आवश्यकता नहीं है, तुम्हारे स्वामी अब बाहुवली हैं, इनकी आज्ञा में प्रवर्तन करो(और चक्र ढीठ सा खडा रहता है) अरे निर्लज्ज अपने स्वामी के चरणों में जाकर क्यों नहीं झुकता(इतना कहकर सम्राट भरत पांव से चक्र पर प्रहार करते हैं)

(और चक्ररत्न बाहुवली की प्रदक्षिणा देकर सम्राट भरत के निकट ही खड़ा हो जाता है)

बाहुवली जीः– मुझे जीवनदान देने वाले आत्मवेत्ता बड़े भैया, मैंने आपके ऊपर कांटे वर्षाये किंतु आपने मुझ पर फूलों की वर्षा की, ओह! मैं कितना अधर्मी हूॅ यह मस्तिष्क आपके विशाल ह्रदय सागर को नहीं माप सके भैया, नहीं माप सका, मैंने घोर अपराध किया है भैया, घोर अपराध किया है, मुझे क्षमा कर दीजिए भैया, क्षमा कर दीजिए।

भरत जीः– नहीं भाई नहीं तुमने कोई अपराध नहीं किया।

बाहुवली जीः– नहीं भैया! नहीं मुझे अपने पापों का प्रायश्चित करना ही होगा, बस अब तो एक ही अभिलाषा शेष है भैया पूज्यवर।

भरत जीः– हॉ!हॉ निःसंकोच कहो प्रिय।

बाहुवली जीः– पितातुल्य बड़े भैया, मुझे जैनेश्वरी दिगंबर दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति प्रदान कीजिए, अनुमति प्रदान कीजिए।

मैं..मैं तपोवन में जाऊॅगा।

भरत जीः– नहीं प्रिय, नहीं इस एक बात को छोड़कर और भी कोई बात हो तो कहो, क्या संसार के कष्ट भोगने के लिए मुझे अकेले छोड़ जाना चाहते हो, युद्ध में तुम्हारी पराजय नहीं हुई है भाई, तुम तो, तुम तो विजयी हुये हो तुम्हें तो आज प्रसन्न होना चाहिए

बाहुवली जीः– आप महान हैं भैया, महान हैं मेरी निष्ठुरता से ये चक्ररत्न मेरे समीप न आ सका परंतु अब तों मुझे कर्म पर्वतों को उखाड़ फेंकना ही होगा, भैया, फेंकना ही होगा। मैं इस संसार में नहीं रह सकूॅगा भैया।

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 06 मार्च 2023 से 1[illegible] मार्च 2023 खड़ेरी जिला दमोह

भरत जीः— नहीं अनुज नहीं तुमने कोई पाप नहीं किया फिर प्रायश्चित क्यों।

बाहुवली जीः— पूज्य श्री में मोक्षपथ पर आपकी प्रतीक्षा करूंगा, अब तक आपके संरक्षण में था अब पूज्य पिताश्री के संरक्षण में कैलाश में जा रहा हूँ, ओह! यह संसार कितना क्षणभंगुर है, मैं अपने निजवैभव को भूलकर प्राप्त पर्याय में तन्मय हो गया था, बस अब मुझे अपना आत्मबल दीजिए भैया, मुझे अब सांसारिक सुःखों की लालसा नहीं रही, मैं अब मोह राजा से युद्ध करने तपोवन जाना चाहता हूँ भैया।

भरत जीः— परंतु बाहु, अभी कुमार महाबल भी तो राज्य सम्भालने योग्य नहीं हुआ।

बाहुवली जीः— कुमार महाबल नहीं तो क्या, कुमार अर्ककीर्ति तों सर्व प्रकार से शासन के योग्य है, यह मेरा राज्य आप उससे सम्भलवा दीजिए बस, मुझे दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति प्रदान कीजिए (दोनों भाई गले मिलकर रोने लगते हैं)

भरत जीः— प्रिय बाहु! मेरा ये निर्बल ह्रदय तुम्हारा वियोग नहीं सहन कर सकेगा। किंतु कल्याण के पथ पर पा रहे हो भाई, जाओ किंतु आज मैं सहोदर स्नेह से वंचित होकर अब इन राजप्रासादों में क्या करूँगा मेरी राज्य लिप्सा के कारण मेरे साथी सहोदर तो वनवास चले गये क्या अब यह चक्रवर्ती राजा संसार ही द्रष्टी में हीन द्रष्टी से नहीं देखा जायेगा।

(भरत अपना मुकुट सम्राट भरत के चरणों में अर्पित करते हुए वन की ओर जाने लगते हैं)

भरत जीः— भाई बाहुवली

भजनः—अब विषयों में नाही रूलेगें................

दृश्य 09

सूत्रधारः— और विपिन तपोवन में बाहुवली तपस्या कर रहे हैं, एक वर्ष हो गया पैरों के ऊपर मिट्टी की मोटी तह जम गई जिनमें सर्पों ने वामियां बना ली, संपूर्ण शरीर पर वन लतायें छा गईं फिर भी तपश्चर्या में रत हैं मानों पत्थर की प्रतिमा खड़ी हो)

भरत जी मुनिराज बाहुवली की स्तुती करने आते है

भरत जीः— भुजबली योगेश्वराय नमो नमः, भुजबली योगेश्वराय नमो नमः, भुजबली योगेश्वराय नमो नमः

सूत्रधारः— हे! यागिराज आपके मन में जिस बात का क्षोभ है, वह अभी मैं त्रिलोकदर्शी भगवान आदिनाथ से जानकर आया हूँ यागिराज जिस पृथ्वि को अनेक राजाओं ने भोग लिया है जिस पर अभी मेरा शासन है, भविष्य में किसी अन्य का शासन होगा ऐसी वेश्या सदृश इस भूमी को आप मेरा समझ रहे हैं, हे ज्ञान सागर इस बात को गुप्त रखने की क्या आवश्यकता है सारा पर्वत पूर्व चक्रवर्ती राजाओं के शासन से भरा हुआ था। हे योगीश्वर! एक राजा का शासन लेख मिटाकर अपना शासन लिखना पड़ा, इस पृथ्वी पर मेरा शासन है ही कहां फिर भी आप इस पृथ्वी को मेरी समझ रहे हैं, इस भूमी की तो बात क्या स्वर्ग के रत्नजड़ित विमान और विभूतियां भी इन्द्रों के लिए नहीं उन्हें भी वो सब छोड़नी पड़ती हैं, इस पृथ्वी के मनुष्यों की तो बात ही कहां, हे आत्मशोधक शरीर भी अपना नहीं तब दूसरे पथार्थों पर हमारा अधिकार ही क्या, हे ज्ञानसागर आपको अपना गुरू स्वीकार करता हूँ, इस पृथ्वी को तृणतुल्य समझकर आप छोड़ आए, मैं नहीं छोड़ सका ये भूमी मेरी नहीं गुरूदेव आपके समक्ष मुझ जैसे तुच्छ प्राणी की गिनती क्या है, मुझे ज्ञानसागर में डूबने की अभिलाषा दो।

(और सहसा ही घंटनाद होने लगते है, बाहुवली भगवान की जय—जय कार होने लगती और भगवान बाहुवली को केवलज्ञान हो जाता है)

सूत्रधारः—और तत्काल ही बाहुवली स्वरूप में लीन हुए और चार घातिया कर्मों का नाश कर उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया तत्काल भरत जी सेना सहित उनकी वंदना करने आए।

(भगवान की स्तुती में एक नृत्य प्रस्तुती)

इसी के साथ नाटिका समाप्त हो जाती है।

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 06 मार्च 2023 से 11 मार्च 2023 खड़ेरी जिला दमोह

कमांक	पात्र
1	भरत जी
2	दक्षिणांक(मंत्री भरत जी)
3	अमात्य(मंत्री भरत जी)
4	माता नंदा
5	राजा 01(दिग्विजय के समय)
6	मंत्री 01(दिग्विजय के समय)
7	राजा 02(दिग्विजय के समय)
8	मंत्री 02(दिग्विजय के समय)
9	राजा 03(दिग्विजय के समय)
10	मंत्री 03(दिग्विजय के समय)
11	सेनापति मागध(भरत जी)
12	द्वारपाल 01 भरत जी
13	द्वारपाल 02 भरत जी
14	उद्घोषक(तीनों युद्धों के समय घोषणा करने वाला)
15	बाहुवली जी
16	मंत्री बाहुवली जी
17	गुप्तचर बाहुवली जी
18	द्वारपाल 01 बाहुवली जी
19	द्वारपाल 02 बाहुवली जी
20	अन्य सेनापति इत्यादि बाहुवली जी के राजदरबार हेतु
21	
22	
23	
24	
	दो नृत्यगीत कमशः भगवान ऋषभदेव के समवशरण हेतु एवं बाहुवली भगवान को केवलज्ञान होने पर

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा [illegible] 2023 से 11 मार्च 2023 खड़ेरी जिला दमोह

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 06 मार्च 2023 से 11 मार्च 2023 खड़ेरी जिला दमोह

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 06 मार्च 2023 से 11 मार्च 2023 खड़ेरी जिला दमोह

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 06 मार्च 2023 से 11 मार्च 2023 खड़ेरी जिला दमोह

श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 06 मार्च 2023 से 11 मार्च 2023 खड़ेरी जिला दमोह